P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* (Part-1) August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

आधुनिक प्रौद्योगिकी शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

लक्ष्मीना भारती
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राज0 म0 महाविद्यालय,
फतेहपुर

सारांश

आज का युग प्रौद्योगिकी व संचार माध्यमों का युग है। आज शिक्षा में कम्प्यूटर, नेट, ऑडियो–विजुअल की माँग बढ़ती जा रही है, क्योंकि विकास के लिए केवल किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि ऐसी शिक्षा चाहिए, जो व्यक्ति की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ा सके। साथ ही ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति को आर्थिक कुशलता में दक्षता प्रदान कर सके। आज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तेजी से बदलाव आया है, इस बदलाव में भौतिकतावाद को भी बढ़ावा मिला है जिससे मानवीय मूल्यों में भी तेजी से गिरावट आयी है। आज के छात्र के लिए नैतिक मूल्यों की महत्ता समाप्त होती जा रही है, वे अनुशासनहीनता के शिकार होते जा रहे हैं। आज डॉक्टर एवं इंजीनियरों की संख्या तो बढ़ती जा रही है किन्तु उनमें सेवा की भावना घटती जा रही है। आज की शिक्षा हमें इंजीनियर, डॉक्टर तो बना रहे हैं। जिससे समाज विकास के नाम पर पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। इसीलिए आज शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है जिससे एक वास्तविक विकास की क्रांति लायी जा सके।

मुख्य शब्द : प्रौद्योगिकी, संचार माध्यम, व्यावसायिक कुशलता, ग्लोबल, भौतिकतावाद, मानवीय मूल्य, तकनीकी शिक्षा, साइबर क्राइम, संवेदनाविहीन, विश्वगुरु।

प्रस्तावना

वर्तमान समय प्रौद्योगिकी व संचार माध्यमों का युग है और नई–नई प्रौद्योगिकी ने हमारी शिक्षा की नई–नई अवधारणाएँ विकसित की हैं। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यावसायिक कुशलता की प्राप्ति भी है। यह कुशलता हमें प्राप्त होती है प्रौद्योगिकी शिक्षा से। ज्ञान की प्राप्ति और किसी विषय में गहराई से अध्ययन के लिए अब यह आवश्यक नहीं है कि शिक्षा के पारम्परिक और औपचारिक संस्थानों की ही शरण लिया जाए। यदि संकल्प शक्ति दृढ़ हो और कोशिश दिल से की जाए तो एक निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम में भी कई नये द्वार खोलने की क्षमता मौजूद है। आज शिक्षा में कम्प्यूटर, नेट, ऑडियो–विजुअल की माँग बढ़ती जा रही है, क्योंकि विकास के लिए केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि एक ऐसी शिक्षा चाहिए जो व्यक्ति की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ा सके, उसकी प्रतिभा को मौका दे सके, जो व्यावहारिक हो, जिसे व्यक्ति खुद करके सीखें, साथ ही ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति को आर्थिक कुशलता में दक्षता प्रदान कर सके। आज ऐसी शिक्षा की जरूरत है, जो 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना कर सके।

ऐसे में आधुनिक प्रौद्योगिकी शिक्षा का तेजी से विकास हो रहा है। इससे तात्पर्य है ऐसी शिक्षा जो, उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। ऐसी शिक्षा जिसमें आप सृजनात्मकता के पंख लगाकर अपने शोध एवं अध्ययन की गइराइयों में गोते लगाकर नए अनुसंधानों में योग दे सकें। यही कारण है कि आज हमारी शिक्षा भी ग्लोबल रूप धारण करती जा रही है। आज कम्प्यूटर, शिक्षा का एक अनिवार्य विषय बन चुका है। बायोटेक्नोलॉजी, माइक्रो बायालोजी जैसे क्षेत्रों की डिमाण्ड बढ़ी है। संचार माध्यमों के चलते आज शिक्षा में नये–नये क्षेत्र सम्मिलित होते जा रहे हैं। आज कम्प्यूटर पर घर बैठे–बैठे देश–विदेश की जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही परम्परागत शिक्षा का रूप वैज्ञानिक बनता जा रहा है। शिक्षा में नवीन तकनीकी का प्रयोग तेजी से बढ़ता जा रहा है। उच्च शिक्षा स्तर पर गठित यशपाल कमेटी रिपोर्ट में भारत के 75वें वर्ष तक का एजेंडा तैयार किया गया है जिसमें स्वाधीनता के 75वें वर्ष यानी 2022 तक 10 करोड़ ऐसे नौजवान तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है, जिन्हें विश्व में कहीं भी रोजगार मिल सके।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय सूचना संचार प्रौद्योगिकी का युग है और जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा। इसने हमारे जीवन को काफी सुगम बनाया है।

विकास की गति को नयी ऊँचाईयों का पंख दे दिया है। आज हम तेजी से विश्वमंच पर उभर कर सामने आये हैं और भारत पुनः एक बार फिर वैश्विक पटल पर विश्व गुरु बनने को तैयार है। संचार प्रौद्योगिकी ने एक तरफ जहाँ हमें नयी ऊँचाईयाँ दी हैं वहीं दूसरी तरफ हमारी सभ्यता–संस्कृति की पहचान 'मानवीय मूल्यों' को कहीं पीछे छोड़ दिया है जिससे हमारा जीवन असंतुलित हो गया है, आज हमारे पास विलासिता की सारी चीजें मौजूद हैं किन्तु मानसिक सुख–शांति खोती जा रही है। अतः इस अध्ययन से समस्या एवं समस्या की जड़ तक पहुँचने में सरलता होगी और उसका सही निदान सम्भव हो सकेगा।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा ही वह नींव है जिस पर किसी देश एवं नागरिक का विकास सम्भव है। आज की तकनीकी शिक्षा ने भौतिकता को बढ़ावा देकर मानवीय मूल्यों को उपेक्षित कर दिया है जिससे शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य भटक गया है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य एक बार पुनः भौतिकता एवं नैतिक मानवीय मूल्यों का समागम कराना है जिससे सतत् विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके; साथ ही एक स्वस्थ मानव एवं स्वस्थ समाज की परिकल्पना सिद्ध की जा सके।

शोध विधि

इस शोध की विधि विवेचनात्मक एवं समीक्षात्मक है। मानविकी विषयों के अनुरूप ही समस्या के विवेचनोपरान्त उसका विश्लेषण एवं समीक्षा करते हुए निष्कर्ष दिया गया है।

विषय वस्तु

आज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तेजी से बदलाव आया है, इस बदलाव में भौतिकतावाद को भी बढ़ावा मिला है, जिसने मानवीय मूल्यों में तेजी से गिरावट लायी है। आज की प्रौद्योगिकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र की व्यावसायिक दक्षता को उभारना है, लेकिन आज प्रौद्योगिकी के विकास ने मनुष्य में असीमित इच्छाओं को पैदा कर दिया है जिससे आज का छात्र शिक्षा का अर्थ मात्र डिग्री प्राप्त करना मात्र समझता है। आज के छात्र के लिए नैतिक मूल्यों की महत्ता समाप्त होती जा रही है; वे अनुशासनहीनता के शिकार होते जा रहे हैं। छोटी–छोटी बातों पर लड़ना, मारना, हिंसा, उपद्रव, आगजनी जैसी घटनाएँ आज हमारे विश्वविद्यालयों में घटती रहती हैं। परीक्षा में मेहनत की बजाय नकल का सहारा लिया जाता है। शिक्षकों के साथ अभद्र व्यवहार एवं मार–पीट की खबरें आये दिन अखबारों की सुर्खियां बटोरते हैं। शिक्षा के निजीकरण ने तो आज शिक्षा को धनवानों की बपौती बना दिया है। आज पैसे के दम पर आप इंजीनियर, डॉक्टर की डिग्री भी खरीद सकते हैं। यही कारण है कि आज डॉक्टर एवं इंजीनियरों की संख्या तो बढ़ती जा रही है किन्तु उनमें सेवा की भावना घटती जा रही है। डॉक्टर आज मरीजों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं, कभी–कभी तो निर्दोष, लाचार मरीजों के अंगों को बेचने का मामला भी सामने आता है जो अमानवीयता का ही प्रतीक है। कितने मरीज डॉक्टर के गलत इलाज के चलते दम तोड़ देते हैं। आज डॉक्टर अपने मरीजों के साथ केवल व्यावसायिक सम्बंध निभा रहा है और मानवीय सम्बंध कहीं गायब से हो चुके हैं। इंजीनियर आज ऐसे पुल, इमारतों का निर्माण कर रहे हैं जो चंद वर्षों में ही धराशायी हो जा रहे हैं जिसके चलते काफी धन एवं जन का नुकसान होता है।

कहाँ चले गये वे मानवीय मूल्य, संवेदना जो हमें एक इंसान बनाते हैं। आज की शिक्षा हमें डॉक्टर एवं इंजीनियर तो बनाते हैं पर इंसान को इंसान बनाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। आज का इंसान भौतिकता एवं विकास की अंधी दौड़ में बेतहाशा भाग रहा है जिससे समाज विकास के नाम पर पतन की गर्त में गिरता जा रहा है।

कैसी विडम्बना है हमारी इस आधुनिक शिक्षा की जो व्यक्ति में मानवीय मूल्यों का जागरण नहीं कर पा रही है। आज का छात्र अपनी तकनीकी शिक्षा का दुरुपयोग कर अपराधिक गतिविधियों में लिप्त होता जा रहा है। साइबर क्राइम तेजी से बढ़ रहे हैं। आतंकवादी संगठनों में कई सॉफ्टवेयर इंजीनियर के जुड़ने की खबर आती रहती है। आज अपराधों में तकनीकी शिक्षा प्राप्त छात्रों की संख्या बढ़ रही है। इतना ही नहीं इन संस्थाओं में रैगिंग के नाम पर नव आगन्तुक छात्रों का शारीरिक एवं मानसिक उत्पीड़न भी किया जाता है। रैगिंग जैसी घिनौनी प्रथा के चलते कितने ही होनहार छात्रों ने मौत का रास्ता चुन लिया। यह भी देखने में आता है कि इन तकनीकी संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र ड्रग्स, कोकीन, शराब आदि गलत आदतों के शिकार हो अपराधिक गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं और अपने मकसद से भटक जाते हैं जिससे उनका जीवन विभिन्न समस्याओं से घिर जाता है।

आज हम कितना भी विकास का दावा कर लें, किन्तु क्या वास्तव में इसे विकास कहा जा सकता है? क्या जीवन में नैतिक मूल्यों, मानवीय मूल्यों का तेजी से पतन विकास के आगे कोई मायने नहीं रखता? क्या केवल व्यावसायिक दक्षता या आर्थिक कुशलता ही आधुनिक प्रौद्योगिकी शिक्षा का मापदण्ड है? और अगर इस आधार को स्वीकार भी कर लिया जाय तो क्या सचमुच हमारा जीवन सुन्दर और सुखमय बन रहा है?

शायद नहीं..... क्योंकि आज प्रत्येक मानव अपना तेजी से विकास कर रहा है और सुख–सुविधा की ढेर सारी वस्तुएँ भी इकट्ठी कर चुका है, मगर बावजूद इसके वह तमाम चुनौतियों एवं समस्याओं से घिरा नजर आता है। वह अंदर से अशांत है, आज वह खुद को निराश, हताश सा पा रहा है।

अतः आज शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक हो गया है जिससे एक वास्तविक विकास की क्रांति लायी जा सके। जिसकी शुरूआत हमें अपने घर से ही करनी होगी जिससे शिक्षण संस्थानों में पहुँचने के बाद छात्रों में इन मानवीय मूल्यों को और पल्लवित किया जा सके। मानवीय मूल्य हर काल, हर युग में सदैव प्रासंगिक रहे हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञानार्जन के साथ–साथ मानवीय मूल्यों का भी विकास

करना है। सही मायने में वही व्यक्ति या देश विकास में आगे बढ़ पाया है जिसने विकास एवं मानवीय मूल्यों को संतुलित रूप से अपनाया है। तकनीकी शिक्षा, प्रौद्योगिकी शिक्षा में भी वही सफलता प्राप्त कर सकता है जो उसे सीखने के लिए अनुशासित, धैर्यवान एवं जिज्ञासु है, जो अपनी शिक्षा का सकारात्मक उपयोग कर रहा है। जिन्होंने मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में उतारा। वह शांति एवं सुख के साथ निरंतर विकास की सीढ़िया चढ़ता गया। मानवीय मूल्यों से रहित तकनीकी शिक्षा वास्तव में धन एवं समय का दुरुपयोग है। जो मानवीय विकास में बाधक है। यह मानव जीवन को संवेदना विहीन बना देती है। विकास वास्तव में एक पक्षीय धारणा न होकर बहुपक्षीय धारणा है तभी तो महात्मा गाँधी जी ने शिक्षा के सम्बंध में कहा है कि, ''शिक्षा मनुष्य के मन–मस्तिष्क व आत्मा का विकास करती है और इसके साथ ही उन्होंने व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा को व्यक्ति के लिए आवश्यक बताया ताकि व्यक्ति आर्थिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर हो सके। अतः तकनीकी शिक्षा में भी सफलता प्राप्त करने के लिए अनुशासन, धैर्य, संयम, सहकारिता जैसे गुणों की अपनी आवश्यकता है। छात्रों में बिना इन गुणों के विकास के वास्तविक विकास नहीं हो सकता। यही कारण है कि प्राचीनकाल में गुरुकुलों में चरित्र निर्माण की शिक्षा पर एवं अनुशासन पर बहुत जोर दिया जाता था। जिससे तत्कालीन समाज में मानवीय मूल्य सबसे ऊपर थे।

निष्कर्ष

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में भौतिक एवं मानवीय मूल्यों के सामंजस्य को महत्व दिया गया है, क्योंकि दोनों के समागम से ही एक चिर स्थायी विकास सम्भव है। मानव ने जब–जब इन मूल्यों में असंतुलन पैदा किया है तब–तब विनाश की गर्त में डूबा है। आज जीवन के हर पहलू में हम पुनः उन मानवीय नैतिक मूल्यों को उपेक्षित कर रहे हैं जिन्होंने हमारे जीवन को अर्थ प्रदान किया है,स्थायित्व प्रदान किया है। आज हम भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में इस कदर मशगूल हो गये हैं कि हमे हमारा पतन दिखायी नहीं दे रहा है। किन्तु इसका परिणाम बहुत ही विनाशकारी है।

अतः इस विनाश को रोकने तथा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों की धरोहर को संजोने में शिक्षा सबसे प्रबल साधन है। इसीलिए वर्तमान समाज एवं शिक्षण संस्थानों में तेजी से गिरते मानवीय मूल्यों को पुनः विकसित करने हेतु आज मूल्य शिक्षा को तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है जिससे हमारे छात्र मूल्य शिक्षा को अपने जीवन में उतार सकें। इसके साथ ही परीक्षा के दबाव को कम किया जाए, उनके जीवन में सकारात्मक सोच विकसित की जाए। शिक्षा को व्यवहारपरक बनाया जाय। साथ ही हमें अपनी युवा पीढ़ी के लिए ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जिनका जीवन स्वयं आदर्श रहा है जैसे हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर अब्दुल कलाम, जो आज भी युवाओं का आदर्श हैं। ऐसे ही अध्यापक इस विश्व–वसुधा को फिर से चाहिए जो अपने जीवन आचरण से युवाओं का सही मार्गदर्शन कर सकें। आज इसकी जरूरत न केवल व्यक्ति, अपितु राष्ट्र एवं विश्व को भी है, तभी यह सम्पूर्ण मानव जगत सही मायने में स्थायी विकास कर सकेगा।

इन्हीं सम्भावनाओं के साथ ही आने वाला समय सकारात्मक विकास से युक्त होगा और भारत फिर से विश्वगुरू का दर्जा प्राप्त करेगा। इसी उम्मीद के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देती हूँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कबीर, हुमायूँ–स्वतंत्र भारत में शिक्षा, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, 1956*
2. *सिंघल, महेशचन्द्र–भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्यायें, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1971*
3. *पाण्डेय, प्रदीप कुमार–दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता: अपेक्षायें एवं उसकी प्रतिपूर्ति, प्रोसीडिंग्स, राजर्षि टण्डन ओपेन यूनि0 इलाहाबाद 2005*
4. *Shukla, Satyabrat : Distance Education and changing role of libraries, Shree Prabhu Pratibha, Allahabad, July-Sept. 2010*
5. *Sharma, Kaushal and Mahapatra, B.C. : ICT in Distance Education : Challenge and opportunities in Higher Education, Proceedings, U.P.R.T. Open University Allahabad, 2006*
6. *योजना – मई 2013*
7. *प्रतियोगिता दर्पण– अप्रैल 2010*